



डॉ. जितेंद्र सिंह ने पंचकूला में उत्सव, संचार और करियर पर आधारित आईआईएसएफ विज्ञान महोत्सव का उद्घाटन किया

मंत्री महोदय ने कहा- भारत में आत्मनिर्भर विज्ञान को बढ़ावा जारी, विज्ञान में आत्मनिर्भरता अब केवल आकांक्षा नहीं रही

ध्रुवीय अनुसंधान से लेकर डीप टेक तक, आईआईएसएफ भारत के विस्तृत विज्ञान पारिस्थितिकी तंत्र को दर्शाता है

प्रविष्टि तिथि: 06 DEC 2025 6:35PM by PIB Delhi

पंचकूला, 6 दिसंबर: केंद्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री डॉ. जितेंद्र सिंह ने आज हरियाणा के पंचकूला में भारतीय अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव (आईआईएस) का उद्घाटन किया। उन्होंने इसे तीन "सी" - उत्सव, संचार और करियर - के आस-पास परिभाषित किया। उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि भारत की वैज्ञानिक प्रगति प्रयोगशालाओं से आगे बढ़नी चाहिए और नागरिकों, छात्रों और युवा पेशेवरों को सार्थक तरीके से इसमें शामिल करना चाहिए। इस महोत्सव का 11वां संस्करण 6 से 9 दिसंबर तक आयोजित किया जा रहा है।

उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव की परिकल्पना एक नियमित शैक्षणिक सम्मेलन के रूप में नहीं, बल्कि एक खुले, जन-केंद्रित मंच के रूप में की गई है जो विज्ञान को लोगों के करीब लाता है। उन्होंने कहा कि यह महोत्सव वैज्ञानिकों और वैज्ञानिक अनुसंधान के लक्षित लाभार्थियों के बीच संवाद को प्रोत्साहित करता है, जो विज्ञान मंत्रालयों और विभागों के बीच बेहतर समन्वय और सामंजस्य पर सरकार के प्रयास को प्रदर्शित करता है।

तीन "सी" के बारे में विस्तार से बताते हुए, मंत्री महोदय ने कहा कि आईआईएसएफ भारत की वैज्ञानिक यात्रा और विभिन्न क्षेत्रों में उपलब्धियों का उत्सव मनाता है, शैक्षणिक और शोध संस्थानों से परे वैज्ञानिक ज्ञान का संचार करता है, और युवा प्रतिभागियों के लिए करियर की खोज के एक मंच के रूप में कार्य करता है। उन्होंने कहा कि छात्रों, शोधकर्ताओं और पहली बार सीखने वाले छात्रों को महोत्सव के दौरान संरचित सत्रों के साथ-साथ अनौपचारिक नेटवर्किंग के माध्यम से अनुसंधान, स्टार्टअप और उद्योग में उभरते अवसरों से परिचित होने का अवसर मिलता है।

आईआईएसएफ को विकसित भारत@2047 के व्यापक राष्ट्रीय दृष्टिकोण के अंतर्गत रखते हुए, डॉ. जितेंद्र सिंह ने कहा कि विज्ञान और प्रौद्योगिकी आर्थिक विकास और सामाजिक परिवर्तन की नींव रखते हैं। उन्होंने कहा कि पिछले एक दशक में, भारत ने विज्ञान के प्रति एक मिशन-संचालित विज्ञान अपनाया है, जिसे सुधारों, बुनियादी ढाँचे में बढ़े हुए निवेश और प्रतिभा विकास पर ज़ोर देने से बल मिला है। उन्होंने बताया कि वैज्ञानिक प्रगति अब सीधे तौर पर शासन और सार्वजनिक सेवा वितरण को बढ़ावा दे रही है, जिसमें बेहतर मौसम पूर्वानुमान और पूर्व चेतावनी प्रणालियों से लेकर ध्रुवीय अनुसंधान और डिजिटल तकनीकें शामिल हैं।

आईआईएसएफ 2025 की थीम "विज्ञान से समृद्धि: आत्मनिर्भर भारत की ओर" का उल्लेख करते हुए, मंत्री महोदय ने कहा कि विज्ञान में आत्मनिर्भरता धीरे-धीरे आकार ले रही है। उन्होंने स्वदेशी स्तर पर प्रमुख वैज्ञानिक संपत्तियों के निर्माण की पहलों पर प्रकाश डाला, जिनमें एक बहुउद्देशीय, सभी मौसमों में काम करने वाला अनुसंधान पोत, जिसके 2028 में शुरू होने की उम्मीद है, और देश का चल रहा मानव पनडुब्बी कार्यक्रम शामिल है। उन्होंने आगे कहा कि भारतीय संस्थान जलवायु डेटा और मॉडल भी प्रदान कर रहे हैं जिनका अंतरराष्ट्रीय स्तर पर उपयोग किया जाता है।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने नवाचार, अनुसंधान उत्पादन और उद्यमिता के क्षेत्र में भारत की बेहतर वैश्विक स्थिति पर प्रकाश डाला और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के विकास, निवासी भारतीयों द्वारा पेटेंट आवेदनों में वृद्धि और विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के उभरते क्षेत्रों में मान्यता का हवाला दिया। उन्होंने चंद्रयान-3 मिशन, कोविड-19 महामारी के दौरान स्वदेशी वैक्सीन विकास और जैव प्रौद्योगिकी में प्रगति जैसी उपलब्धियों का उल्लेख अनुसंधान के मजबूत परिणाम देने वाले उदाहरणों के रूप में किया।

युवाओं तक पहुँच बढ़ाने पर ज़ोर देते हुए, मंत्री महोदय ने कहा कि आईआईएसएफ की गतिविधियों का एक बड़ा हिस्सा स्कूली बच्चों, कॉलेज के छात्रों और युवा शोधकर्ताओं के लिए डिज़ाइन किया गया है। उन्होंने विज्ञान के क्षेत्र में करियर के बारे में समझ को व्यापक बनाने की आवश्यकता पर ज़ोर दिया और इस बात पर ज़ोर दिया कि आज अवसर सरकारी रोज़गार से कहीं आगे बढ़कर स्टार्टअप, उद्योग-आधारित अनुसंधान और अनुप्रयुक्त नवाचार तक फैले हुए हैं। क्रांति तकनीक, जैव प्रौद्योगिकी, नीली अर्थव्यवस्था और गहन तकनीकी उद्यमिता जैसे क्षेत्रों पर सत्र इस वर्ष के कार्यक्रम का हिस्सा हैं।

डॉ. जितेंद्र सिंह ने सार्वजनिक अनुसंधान संस्थानों और निजी उद्योग के बीच मजबूत सहयोग के महत्व पर भी ज़ोर दिया और कहा कि जब नीतिगत समर्थन, वित्त पोषण और उद्यम मिलकर काम करते हैं, तो नवाचार फलता-फूलता है। उन्होंने कहा कि अंतरिक्ष, स्वास्थ्य प्रौद्योगिकी और उन्नत विनिर्माण जैसे क्षेत्रों में निजी भागीदारी को और अधिक बढ़ाने की अनुमति देने वाले हालिया नीतिगत उपायों का उद्देश्य एक अधिक सक्षम नवाचार पारिस्थितिकी तंत्र का निर्माण करना है।

मंत्री महोदय ने उद्घाटन कार्यक्रम में विज्ञान-प्रौद्योगिकी-रक्षा-अंतरिक्ष प्रदर्शनी और "विज्ञान पर एक क्षेत्र" प्रदर्शनी का उद्घाटन किया, जो इंटरैक्टिव डिस्प्ले के माध्यम से वैज्ञानिक क्षमताओं और चल रहे अनुसंधान को प्रदर्शित करती है। उन्होंने अंटार्कटिका में भारत के अनुसंधान केंद्र, भारती के शोधकर्ताओं के साथ लाइव इंटरफ़ेस के माध्यम से बातचीत भी की और चरम ध्रुवीय परिस्थितियों में किए जा रहे वैज्ञानिक कार्यों की समीक्षा की, जिसमें

भारत के बढ़ते ध्रुवीय अनुसंधान प्रयासों और स्वदेशी क्षमताओं पर प्रकाश डाला गया।

अगले चार दिनों में आयोजित होने वाले प्रदर्शनियों, व्याख्यानो और इंटरैक्टिव सत्रों के साथ, भारत अंतर्राष्ट्रीय विज्ञान महोत्सव का उद्देश्य विज्ञान के साथ जनता की सहभागिता को गहरा करना है, साथ ही अनुसंधान, नवाचार और मानव संसाधन विकास में दीर्घकालिक राष्ट्रीय उद्देश्यों में योगदान देना है।









पीके/केसी/केएल/पीके

(रिलीज़ आईडी: 2199874) आगंतुक पटल : 225

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English , Punjabi , Urdu , Marathi , Tamil , Kannada